North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

IRJIF I.F. : 5.010

ISSN: 2454-9827 Vol. 7, Issue-10 October -2021

Index Copernicus Value: 57.07 DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2021.00009.9 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

A Peer Reviewed Refereed Journal

मुगल बुंदेला संबन्धः ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 उमेश चन्द्र यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी

प्रस्तावना –

पवन भूमि बुन्देलखण्ड का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। बुंदेलखण्ड का प्राचीन नाम जुझौती है, जो संस्कृत शब्द जेजाभुक्ति का अपभ्रंश है। श्री गोरे लाल तिवारी के अनुसार ," भारत के मध्य भाग मे नर्मदा के उत्तर और यमुना के दक्षिण में विंध्याचल पर्वत की शाखाओं से समाकीर्ण और यमुना की सहायक नदियों के जल से सिंचित सृष्टि सौन्दर्यालंकृत जो प्रदेश है उसे "बुंदेलखण्ड" कहते हैं।" बुंदेलखण्ड के नाम समय–समय पर परिवर्तित होते रहे, परिवर्तन की ज्वाला में यह प्रवाहित होता रहा। बुंदेलखण्ड को दशार्ण, जेजाक भुक्ति, जुझौती, जुझार खण्ड आदि नामों से पुकारा जाता था। राजनीतिक दृष्टि से वर्तमान बुंदेलखण्ड में उत्तर प्रदेश के पाँच जिले झाँसी, जालौन, बाँदा, हम्मीरपुर, ललितपुर और मध्य प्रदेश के छः जिले दतिया, टीकमगढ़ ,सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, सम्मिलित है।

भारत ह्रदय बुंदेलखण्ड पर नवीं से लेकर तेरहवीं सदी तक चन्देल वंश का शासन रहा। चन्देल अपना सम्बन्ध चन्द्रमा से जोड़ते है, जो इस बात का सूचक है कि चन्देल चन्द्र वंशी क्षत्रिय थे। इस वंश की स्थापना नन्नुक नामक व्यक्ति ने की थी । महोबा के एक अभलेख में अंकित है कि चन्देल राजा जयशक्ति या जेजा ने अपने नाम पर राज्य का नाम जेजाकभुक्ति रखा। इस वंश के प्रतापी राजाओं ने बुंदेलखण्ड के राजनीतिक, और सांस्कृतिक उन्नति में महती भूमिका अदा की। चन्देल काल में बुंदेलखंड में मूर्तिकला, वास्तुकला तथा अन्य कलाओं की उन्नति व विकास हुआ। बुंदेलखण्ड के गौरव एवं शौर्य युक्त इतिहास परमार्दिदेव के वीर नायकों आल्हा एवं उदल के योगदान के उल्लेख के बिना अधूरा रह जाता है। जिन्होंने अपने जीवन काल मे अनेकों लड़ाईयाँ सफलता पूर्वक लड़ी। चन्देलों की कीर्ति के अनेक शिलालेख हैं। देवगढ़ के शिलालेख

में चन्देल वैभव इस प्रकार दर्शाया है –"नमः शिवाय। चान्देल वंश कुमुदेन्दु विशाल कीर्तिः ख्यातो बभूव नृप संघनताहिन पद्मः।' चन्देलों के प्रमुख स्थान खजुराहो, अजयगढ़, कालिंजर, महोबा, दुधही, चांदपुर आदि हैं।चन्देल अभिलेख से स्पष्ट है कि परमार नरेश भोज के समय मे विदेशी आक्रमणकारियों का ताँता लग गया था। कालिंजर को लूटने के लिए मुहम्मद कासिम, महमूद गज़नवी, शहाबुद्दीन गौरी आदि आए और विपुलधन अपने साथ ले गये। कुतुबुद्दीन ऐबक, मुहम्मद गौरी के द्वारा यहां का शासक बनाया गया था उसके मरने के बाद वह स्वतंत्र हुआ और चंगेजखाँ के आक्रमण तक शासक बना रहा। बुंदेलखण्ड में कलिंजर का किला सभी बादशाहों को आकर्षण का केन्द्र रहा और इसे प्राप्त करने के सभी ने प्रयत्न किया। हिन्दु और मुसलमान राजाओं में इसके निमित्त अनेक लड़ाईयां हुईं। खिलजी वंश के शासन सन् 1320 तक कलिंजर और अजयगढ़ चन्देलों के हाथ में ही रहे। इसी समय नरसिंहराय ने ग्वालियर पर अपना अधिकार किया। बाद में यह तोमरों के हाथ में चला गया। मानसिंह तोमर ग्वालियर के प्रसिद्ध राजा माने गए हैं।

सल्तनतकाल में बुंदेलखण्ड की प्रमुख राजनैतिक घटना बुंदेलों का आविर्भाव थी, जिन्होंने चन्देल सत्ता के अवसान के बाद बुंदेलखण्ड के रिक्त को भरने का प्रयास किया, बुंदेलखण्ड परिक्षेत्र में सल्तनत काल में बुंदेलों की उभरती हुई शक्ति चन्देलों एवं खंगारों के पतनशीलता का परिणाम थी। बुंदेलों को काशी के गहड़वाल क्षत्रियों का वंशज माना जाता हैं। बुंदेले काशी राज वीरभद्र के पुत्र हेमकर्ण (पंचम) को अपना अदि पूर्वज मानते हैं। ऐसी मान्यता है कि विन्ध्यवासिनी देवी ने हेमकर्ण को पंचम एवं विन्ध्यभूमि उपसर्ग के साथ विन्ध्येला की उपाधि और वरदान दिया था। हेमकर्ण के समय से ही उसके वंशजों ने विन्ध्येला उपाधि लगाना प्रारम्भ कर दिया था, जो कालान्तर में बुंदेला हो गया। एक अन्य मत के अनुसार, 'बुंदेला' शब्द की उत्पत्ति बूँद (रक्त की बूँद) से हुई। महाराजा छत्रसाल के राजकवि ने 'छत्रप्रकाश' में 'बुंदेला' शब्द की व्यख्या बड़े अलौकिक ढ़ंग से प्रस्तुत की है। उनके अनुसार, " गहरवार वंश के हेमकर्ण ने विन्ध्यवासिनी देवी दुर्गा के चरणों में अपने मस्तक की रक्त की बूँदें अर्पित करके माँ दुर्गा से वरदान प्राप्त किया। " इस हेमकर्ण ने रक्त की बूँदों के बलिदान के फलस्वरूप अपना नाम 'बुंदेला' रखा। यहीं से बुंदेला शब्द की उत्पत्ति हुई और इसी के नाम पर इस देश का नाम 'बुंदेलखण्ड' पड़ा। पंचम बुंदेला की मृत्यु के बाद उसके एक वंशज वीर बुंदेला ने मऊ, मिहौनी, कालपी आदि पर अधिकार कर इस प्रदेश में बुंदेली सत्ता का बीजारोपण किया था। इसके बाद करण पाल के वंशज अर्जुनपाल ने मिहौनी को अपनी राजधानी बनाया। अर्जुनपाल के एक उत्तराधिकारी सोहनपाल ने गढ़कुंडार और उससे लगे प्रदेश पर 1215ई.में अधिकार कर गढ़कुंडार को अपनी राजधानी बनाया ,सोहनपाल के वंशज यहीं से 1531ई. तक आस–पास के क्षेत्रों पर राज्य करते रहें। सन् 1531 में सोहनपाल के

नवें वंशज रुद्रप्रताप ने वेतवा नदी के तट पर अपनी नई राजधनी ओरछा की नींव डाली। महाराजा रुद्रप्रताप की मृत्यु (1531ई.) के बाद उनके पुत्र भारतीचंद ने ओरछा दुर्ग एवं नगर बसावट को पूर्ण कराया और 1539 ई. को राजधानी गढ़–कुंडार से ओरछा हस्तांतरित की।

भरतीय इतिहास में मुगल काल मे बुंदेलखण्ड के नाम से उस प्रदेश को जाना जाता है जिस पर बुंदेलों का आधिपत्य था। रुद्रप्रताप के साथ ही ओरछा के शासकों का युगारंभ होता है। वह सिकन्दर और इब्राहिम लोदी दोनों से लड़ा था। रुद्रप्रताप बड़ा नीतिज्ञ था, ग्वालियर के तोमर नरेशों से उसने मैत्री संधी की। उसके मृत्यु के बाद भारतीचन्द्र (1531ई०–1554ई०) गद्दी पर बैठा। भारती चन्द्र के समय से ओरछा की गणना मध्य भारत के प्रमुख राज्यों में होने लगी। हुमायूँ को जब शेरशाह ने पदच्युत करके सिंहासन हथियाया था तब उसने बुंदेलखंड के जतारा नामक स्थान पर दुर्ग बनवा कर हिन्दू राजाओं को दमित करने के निमित्त अपने पुत्र सलीमशाह को रखा। कालिंजर का किला कीरतसिंह चन्देल के अधिकार में था। शेरशाह ने इस पर आक्रमण किया तो भारतीचन्द ने कीरतसिंह की सहायता के लिए अपने भाई मधुकर शाह के नेतृत्व में सेना भेजी थी। शेरशाह युद्ध में मारा गया और उसके पुत्र सलीमशाह को दिल्ली जाना पड़ा।

भारतीचन्द के उपरांत मधुकरशाह (1554 ई०–1592 ई०) गद्दी पर बैठा। इसके समय में स्वतंत्र ओरछा राज्य की स्थापना हुई। मुगल–बुंदेला संघर्ष का आरम्भ मधुकरशह के काल से हुआ।इस समय मुगल सम्राट के पद पर अकबर आसीन था। मधुकर शाह द्वारा ग्वालियर एवं सिरोंज पर आक्रमण के कारण अकबर ने मधुकर शाह को रोकने और दंडित करने के लिए अनेक बार सेना भेजी। मधुकर शाह बार–बार अधीनता स्वीकार कर लेता और फिर बागी बन जाता था। मुगलों के साथ संघर्ष मे अपने दो पुत्रों के मारे जाने के बाद भी मधुकर शाह दबा नही, वह बागी बना रहा और अंत में बुंदेलखड के जंगलों में कहीं उसकी मृत्यु हो गयी। मधुकर शाह हिन्दू संस्कृति और सभ्यता के पोषक थे और इसी कारण मरते दम तक उन्होंने बुंदेलखण्ड की संस्कृति की रक्षा की और प्राणों तक की परवाह नही की। भारतीय इतिहास मे मधुकर शाही तिलक बहुत प्रसिद्ध है। अकबर के समक्ष मधुकरशाह ने तिलक तथा माला धारण कर अपनी धार्मिक दृढ़ता का परिचय दिया । ओरछा में मधुकर शाह ने दो मंदिर बनवाए, एक श्री चतुर्भज जी और दूसरा भगवान रामराजा (1574ई.) का मंदिर है। इसी मंदिर में, मधुकरशाह के महारानी कुँवर गणेश जोकि भगवान राम की अनन्य भक्त थीं, द्वारा अयोध्या से लाईं रामचन्द्र की मूर्ति स्थापना हुई। मधुकरशाह के पश्चात उनके ज्येष्ठ पुत्र रामशाह ओरछा शासक बने। उसने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली और अकबर ने उसे ओरछा का राजा भी स्वीकार कर लिया। उसका भाई वीर सिंह देव बड़ौनी का जगीरदार था, वह अत्यंत महत्वाकांक्षी थी । पराक्रमी वीरसिंह देव प्रथम ने अपने अतुलनीय बल एवं अटूट साहस के द्वारा ही अपने राज्य का विस्तार किया और बुंदेलखण्ड

की कीर्ति पताका फहराई। तोमरगढ़, नरवर, कैलारस, केरछा, भंडेर एवं एरच पर अधिकार जमाकर उन्होने अपनी शक्ति को बढाया। वीर सिंह शहजादा सलीम से अच्छे संबन्ध थे। सलीम के आदेश पर ही उसने 12 अगस्त 1602 ई. में बुंदेलखण्ड में दतिया के निकट अंतरी नामक जगह पर अकबर के नवरत्नों में से अबुल फजल की हत्या कर दी। जब सलीम जहाँगीर के नाम से बादशाह बना तो उसने सन् 1606 ई. में वीर सिंह को ओरछा का राजा बना दिया और रामशाह को चन्देरी का राज्य दे दिया। इस प्रकार बुंदेलों के दो राज्य बन गये। वीर सिंह देव ओरछा का राज्य और रामशह चन्देरी का बनाया गया। वीरसिंह देव महान धार्मिक प्रजापालक शासक थे, वे बुंदेलखण्ड के जनप्रिय शासक माने जाते थे। महाराजा ने जहाँगीर की कृपाओं का भरपूर उपयोग किया और राज्य का विस्तार किया और दो करोड़ रूपया की वार्षिक आय कर ली। उन्होने इष्टपूर्ति यज्ञ करके 52 इमारतों का शिलान्यास किया था। 1625 ई. खुर्रम ने जहाँगीर और नूरजहाँ के विरुद्ध विद्रोह किया, तो वीरसिंह बुंदेला ने जहाँगीर की सहायता हेतु एक विशाल सेना अपने पुत्र जुझार सिंह के नेतृत्व में भेजी, जिस कारण खुर्रम प्रारम्भ से ही ओरछा राज्य से खिन्न था। सन् 1627ई. में वीरसिंह देव की मृत्यु हो गयी उसके बाद जुझारसिंह (1627ई.–1635ई.) ओरछा के राजा बने। इसके कुछ समय बाद शहजादा खुर्रम शाहजहाँ के नाम से मुगल बादशाह बना तब जुझारसहिं ने बुंदेलखण्ड का प्रबन्ध अपने पुत्र विक्रमाजीत को सौंपकर आगरा के लिए प्रस्थान किया। आगरा में उसका बड़ा आदर सम्मान हुआ। परंतु शाहजहाँ वीरसिंह देव के कृतित्व को भूला नही था। वीरसिंह देव द्वारा एकत्रित विशाल धन राशि पर भी शाहजहाँ की नजर थी, उसने उस सम्पत्ति की जाँच कराने का अदेश दिया। जुझार सिंह इसमें अपना बड़ा अपमान समझा और बिना बादशाह की आज्ञा के आगरा से ओरछा चला आया और युद्ध की तैयारी करने लगा। यही कारण है कि शाहजहाँ ने ओरछा पर आक्रमण करने का अदेश दिया । शाहजहाँ के आदेश पर महावत खाँ, खानेजहाँ लोदी एवं अब्दुल्ला खाँ के नेतृत्व में मुगल सेनाओं ने क्रमशः आगरा, मालवा एवं कन्नौज (उत्तर, उत्तर–पश्चिम एवं दक्षिण) की ओर ओरछा पर आक्रमण कर दिया। महावत खाँ की मध्यस्थता शाहजहाँ ने उसे क्षमा कर दिया तथा महावत खाँ के साथ दक्षिण भारत के अभियान पर जाने का आदेश दिया। दक्षिण भारत जाने पर भी उसकी विद्रोही भावनाएं शान्त नहीं हुई। कुछ ही महीने बाद जुझार सिंह महावत खाँ से छुट्टी लेकर ओरछा लौट आया तथा पड़ोसी राजा प्रेम नारायण पर आक्रमण कर उससे चौरागढ़ का दुर्ग छीन लिया और उसका वध कर दिया। प्रेमनारायण के पुत्र हिरदेश शाह ने जुझार सिंह के विरुद्ध शाहजहाँ से मदद की गुहार की। शाहजहाँने जुझार सिंह को आदेश दिया कि वह –

1.दश लाख रूपया शाही कोष में जमा करे ।

2. गढ़ा का प्रदेश मुगलों को सौंपे अथवा उसी के बराबर का क्षेत्र मुगलों को सौंपे।

जुझार सिंह बादशाह के इस आदेश को मानने से मना कर दिया और युद्ध की तैयारी में जुट गया, फलतः युद्ध अनिवार्य हो गया। इसी बीच बिक्रमाजीत भी अपने पिता के पास वापस आ गया। बादशाह ने तुरंत शहजादा औरंगजेब के सेनापतित्व में एक विशाल सेना जुझार सिंह के खिलाफ भेजी, जुझार सिंह इस सेना का मुकाबला न कर सका और चार अक्टूबर 1635 ई. को मुगलों ने ओरछा के किले पर अधिकार कर लिया जुझार सिंह किले को छोड़कर भाग गया। मुगल सेना ने उसका पीछा किया वह बहुत दिनों तक इधर उधर भटकता रहा अंत में उसने गोंड के जंगलों में शरण ली, परन्तु गोडों ने उसे पकड़ कर मार डाला और उसका सिर काट कर शाहजहाँ के दरबार में भेज दिया। बुंदेली स्त्रियों को मुगल हरम में अपमान जनक जीवन जीने के लिए बाध्य किया गया। जुझार सिंह के विरूद्ध राम शह के पौत्र देवी सिंह ने सहायता की जिस कारण शाहजहाँ ने उसे ओरछा का दुर्ग दे दिया। परंतु अन्य बुंदेला जागीरदारों ने उसके आधिपत्य को अस्वीकार कर दिया तथा बुंदेलखण्ड में निरंतर अशान्ति बनी रही । महोबा के चम्पतराय ने 1639ई. में मुगल क्षेत्र को लूटना प्रारम्भ कर दिया। जनता के सक्रिय विरोध के कारण देवी सिंह ओरछा छोड़कर चन्देरी चला गया, अन्ततः शाहजहाँ ने जुझार सिंह के भाई पहाड़ सिंह (1642–1653ई.) को सन् 1642 ई. में ओरछा की गद्दी पर बैठा दिया। ओरछा की गद्दी पर वीर सिंह के उत्तराधिकारी को आसीन करने के अपने लक्ष्य की पूर्ति पर चम्पत राय ने तलवार म्यान में कर ली। पहाड़ सिंह और उसके वंशज; सुजान सिंह, इन्द्रमणि ,जसवंत सिंह, भगवंत सिंह और उद्योत सिंह (1689– 1736 ई.) मुगलों के स्वामी भक्त बने रहे किन्तु चम्पत राय और उनके पुत्र छत्रसाल ने बुंदेलखण्ड में मुगलों विरुद्ध संघर्ष की अग्नि ठण्डी नहीं होने दी।

वीरसिंह के उपरांत चम्पत राय प्रताप का नाम इतिहास प्रसिद्ध है। चम्पत राय ओरछा के संस्थापक रुद्रप्रताप के पुत्र उदयाजित के वंशज भगवंत राय के पुत्र थे। युवा होते ही चम्पत राय ओरछा नरेश वीरसिंह की सेवा में चले गये। उन्होंने न केवल वीर सिंह वरन जुझार सिंह की एक वफादार सेवक, मित्र औार मरामर्शदाता तथा ओरछा राज्य के रक्षक की भाँति अपनी सेवाएं अर्पित की। पहाड़ सिंह के ओरक्षा का शासक बनने के बाद चम्पत राय ने मुगलों की सेवा ग्रहण कर ली। चम्पत राय द्वारा कन्धार आक्रमण में दिखाई गई वीरता से शाहजहाँ प्रसन्न होकर कौच की जागीर दी। परन्तु कुछ समय बाद कतिपय कारणों से नाराज दारा शिकोह ने चम्पत राय से जागीर छीनकर पहाड़ सिंह को दे दी। फलतः एक बार फिर उन्होने मुगल विरोधी गतिविधियाँ एवं लूट–पाट संचालित करने लगे। मुगल उत्तराधिकार युद्ध में दारा के विपरीत चम्पत राय औरगंजेब की मदद की। दारा की मृत्यु और औरंगजेब के बादशाह बनने पर औरंगज़ेब की सहायता करने (दारा के विरुद्ध) के उपलक्ष्य में उन्हें ओरछा से जमुना तक का प्रदेश जागीर में दिया गया था। दिल्ली दरबार के उमरावर्ग मे होते हुए भी चम्पतराय ने बुंदेलखंड को स्वाधीन

करने का प्रयत्न किया और वे औरंगज़ेब से ही भिड़ गए। औरंगजेब ने शुभकरण बुंदेला के नेतृत्व में विद्रोह के दमन हेतु सेना भेजी। चम्पत राय ने पत्नी लाल कुंवर के साथ धंधेरों के यहाँ शरण ली। परन्तु मुगलों ने उन्हें घेर लिया। चम्पत अपनी रानी लाल कुंवर सहित सन 1661ई. मे आत्महत्या कर ली। ओरछा दरबार का प्रभाव यहाँ से शून्य हो जाता है। इस कारण से बुंदेलखण्ड में औरंगजेब के विरुद्ध जनारोष बना रहा। चम्पत राय का बलिदान व्यर्थ नही गया, बुंदेली एकता की जो चिंगारी चम्पत राय ने भड़कायी थी उसे हवा देने का काम उनके महान पुत्र ने छत्रसाल किया। छत्रसाल योग्य पिता के योग्य पुत्र सिद्ध हुए।

छत्रसाल का जन्म 1649 ई. को कटेरा के निकट मोर पहाड़िया के जंगलों में चम्पतराय के चौथे पुत्र के रुप में हुआ । जिस समय चम्पतराय की मृत्यु हुई उस समय छत्रसाल की आयु मात्र 12 वर्ष की थी। परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने के कारण कुछ समय के लिए छत्रसाल अपने भाई अंगद और चाचा जमा शाह के साथ मिर्जा राजा जयसिंह की सेना में सम्मिलित हो गये। छत्रसाल ने पुरंदर के युद्ध में भी भाग लिया, परन्तु उनकी आत्मा शिवाजी के विरुद्ध पितृहंता मुगलों का साथ देने को लेकर धिक्कारने लगी ं शिवाजी जिस तरह मुगलों से संघर्षरत थे, उससे छत्रसाल को अत्यन्त प्रेरणा मिली। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि किसी तरह शिवाजी से भेंट करें। मुगल सेना से भगकर वे भीमा नदी पार करके 1667 ई. में शिवाजी से जा मिलें। शिवाजी ने उन्हें बुंदेलखण्ड वापस जाकर बुंदेला स्वातंत्रय तथा मुगल विरोधी संग्राम शुरू करने की प्रेरणा दी। शिवाजी का आशिर्वाद पाकर छत्रसाल ने 1671 ई. बुंदेलखण्ड वापस आकर मुगलों को ललकार कर बुंदेला स्वातंत्रय युद्ध का आह्वान किया। इसी समय मुगल विरोधी वातावरण की भूमिका बुंदेलखण्ड में बन रही थी क्योंकि सन् 1669 को औरंगजेब हिंदुओं के मंदिर आदि तोड़ने का आदेश जारी किया। इस आदेश के पालनार्थ ग्वालियर का फौजदार फिदाई खाँ बुंदेली राजधानी ओरक्षा के मंदिरों को ध्वस्त करने हेतु सेना सहित आगे बढ़ा। ऐसे में आरक्षा नरेश सुजान सिंह छात्रसाल का सहयोग करने को तैयार हो गए। बुंदेलों की वीरता के सामके उसके मंसूबे मिट्टी में मिल गये। इसके फलस्वरूप बुंदेला राजाओं में मुगल सत्ता के विरूद्ध प्रतिशोध की भावना फैल गयी और वे एक स्वर में छत्रसाल के मुगल विरोधी नारे को सफल बनाने में सहयोगी बन गये । सर्व प्रथम सेना के गठन के बाद छत्रसाल ने धंधेरों पर आक्रमण किया और उन्हे आत्मसमर्पण हेतु विवश किया। धंधेरों ने छत्रसाल के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया तथा केशरी सिंह धंधेरे सेना सहित छत्रसाल के साथ हो गये। इसके बाद छत्रसाल ने सिरोंज, चन्द्रपुर, मैहर, धमौनी पर सफल पर आक्रमण किया। कालांतर में सागर पर भी अधिकार कर लिया।

1675 ई. छत्रसाल ने पन्ना पर आक्रमण कर वहाँ के गौड़ राजा को परास्त किया। पन्ना पर अधिकार कर उसे अपने साम्राज्य की राजधानी बनाया। जब छत्रसाल ने पन्ना राज्य की स्थापना

की तो ओरछा का ज्यातर वैभव पन्ना चला गया। छत्रसाल अपने पूरे जीवन काल में मुगलों से संघर्ष करते रहे पर कभी मुगल पूर्णतः बुंदेलखण्ड पर अधिकार नही कर पाये। अब छत्रसाल की बहादुरी का डंका दूर–दूर तक बजने लगा। समस्त बुंदेलखण्ड के लगभग सत्तर छोटे–बड़े जागीदार एवं सरदार छत्रसाल के सहयोगार्थ आ गये। इसी बीच छत्रसाल और मुगलों के बीच अनेक युद्ध लड़े गये कभी छत्रसाल का तो कभी मुंगलों का पलड़ा भरी रहता। अन्ततः जनवरी 1707 ई. को औरंगजेब ने छत्रसाल का मुगल विरोध समाप्त करने के छत्रसाल को राजा की उपाधि तथा 4000 का मनसब प्रदान किया। इसके उपरान्त छत्रसाल औरंगजेब की मृत्यु फरवरी 1707 ई. तक शाही दरबार में रहे, और बाद में बुंदेलखण्ड वापस आ गये।छत्रसाल का मुगल बादशह बहादुर शाह और फर्रूखसियर के सथ अच्छे सम्बन्ध थे ,दोनो ने क्रमशः छत्रसाल को 5000 तथा 6000 का मनसब प्रदान किया। छत्रसाल के साथ मुगलों के संघर्ष का अन्तिम दौर सम्राट मुहम्मदशाह के गद्दी पर बैठते ही शुरू हो गया। इलाहाबाद का नवनियुक्त सूबेदार मुहम्मद खाँ वंगश का काफी क्षेत्र पन्ना राज्य ने अधिग्रहीत कर लिया था। जिसे वंगश खाँ पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगा फलतः उसके और छत्रसाल के बीच संघर्ष शुरू हुआ। जिसका समापन 1729 ई. में जैतपुर घेरे में हुआ। वंगश– बुंदेला युद्ध के अन्तिम चरण में छत्रसाल ने विवश होकर पेशवा बाजीराव से सहायता का आग्रह किया। बाजीराव ने इसे अवसर के रूप में देखा और बुंदेखण्ड आ पहुँचा। जैतपुर में मराठों और बुंदेलों की संयुक्त सेना ने वंगश को घेर लिया, शाही सेना के रसद पहुँचाने के सब मार्ग बंद कर दिए गये।वंगश को आत्मसमर्पण के लिए विवश होना पड़ा। उसने बुंदेलखण्ड पर फिर आक्रमण न करने का वचन दिया और उसे बुंदेलखण्ड से सुरक्षित निकल जाने दिया गया । छत्रसाल ने कृतज्ञ होकर वाजीराव को अपना दत्तक पुत्र स्वीकार करते हुए पन्ना राज्य का एक तिहाई भाग का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया । इस प्रकार बुंदेलखण्ड में मुगल सत्ता की समाप्ति पर मराठा प्रभुत्व का आविर्भाव हुआ। इसके पश्चात 1731 ई. को छत्रसाल की मृत्यु हो गयी और बुंदेलखण्ड के इतिहास के युग में मुगल युग का अंत हो गया।

छत्रसाल की मृत्यु के बाद बुंदेलखंड राज्य तीन भागों में बँट गया। एक भाग हिरदेशाह, दूसरा जगतराय और तीसरा पेशवा को मिला।

(क) प्रथम हिस्से में हिरदेशाह को पन्ना, मऊ, गढ़ाकोटा, कलिंजर, शाहगढ़ और उसके आसपास के इलाके मिले।

(ख) द्वितीय हिस्से में जगतराय को जैतपुर, अजयगढ़, जरखारी, बिजावर, सरोला, भूरागढ़ और बाँदा मिला।

(ग) बाजीराव को तीसरे हिस्से में कलपी, हटा, हृदयनगर, जालौन, गुरसाय, झाँसी, गुना, गढ़कोटा और सागर इत्यादि मिला।

निष्कर्ष–

इस प्रकार हम पाते हैं कि मुगल–बुंदेला सम्बन्धों में समय–समय पर उतार चढ़ाव आते रहे। कतिपय बुंदेला शासकों ने मुगलों के प्रति स्वामी भक्ति दिखाई और पुरस्कृत भी हुए। परन्तु वही दूसरी ओर मधुकरशाह, जुझारसिंह, चम्पतराय तथा छत्रसाल जैसे बुंदेलों ने मुगलों के समक्ष चुनौती पेश की। मधुकर शाह ने मुगलों के साथ संघर्ष की नींव रखी और चम्पत राय ने मुगलों के साथ संघर्ष को स्वतंत्रता संघर्ष को स्वतंत्रता संग्राम का स्वरूप दे दिया। वहीं बुंदेलखण्ड केसरी महाराजा छत्रसाल ने बुंदेलों को संगठित कर मुगलों को बुंदेलखण्ड राज्य के स्वतंत्र अस्तित्व को मानने पर विवश किया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जो स्थान महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी का तथा राजपूताना में महाराणा प्रताप का है, वही स्थान बुंदेलखण्ड में महाराजा छत्रसाल का है।

संदर्भ सूची

श्रीवास्तव बी. के. – बुंदेलखण्ड का इतिहास (1531–1857ई.) ,डी. के. प्रिंटवर्ल्ड, नई दिल्ली, 2019

त्रिपाठी मोती लाल – बुंदेलखण्ड का इतिहास , लक्ष्मी प्रकाशन , झाँसी , 1991

तिवारी गाोरे लाल – बुंदेलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास , नागरी प्रचारिणी सभा , काशी संवत ,1990

कुशवाहा अजय सिंह रश्मि – बुंदेलखण्ड : किलों की भूमि (शौर्य, कला, संस्कृति एवं पर्यटन) प्रकाशन, लखनऊ , 2020

गुप्त , भगवान दास – मुगलों के अन्तरगत बुंदेलखण्ड का सामजिक ,आर्थिक, सांस्कृतिक इतिहास (1531– 1731), हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 1990

गुप्त , भगवान दास – मुगलों के अंतर्गत बुंदेलखण्ड के इतिहास – संस्कृति के हिन्दी साहित्यिक स्रोतों का मूल्यांकन, भावना प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, झाँसी, 2001

त्रिपाठी काशी प्रसाद – बुंदेलखण्ड : संस्कृति, परंपरा और विरासत, लीसा प्रकाशन, 2017